वाणिज्य-शिक्षण के अनुदेशनात्मक उद्देश्य
(INSTRUCTIONAL OBJECTIVES OF COMMERCE TEACHING)

आधुनिक युग शैक्षिक तकनीकी का युग है। शैक्षिक तकनीकी का प्रभाव शिक्षण उद्देश्यों पर भी पड़ा है। इसलिए आज हम शिक्षण उद्देश्यों के स्थान पर अनुदेशक के उद्देश्यों को अधिक महत्त्व देते हैं। अनुदेशनात्मक उद्देश्यों पर सबसे पूर्व प्रो० बी० एस० ब्लूम ने व्यवस्थित विचार व्यक्त किये तथा संज्ञानात्मक पक्ष के उद्देश्यों की विशिष्टीकरण (Specification) के साथ विस्तृत व्याख्या की। यह व्याख्या सभी शिक्षण विषयों पर समान रूप से लागू होती है। इस व्याख्या के अनुसार वाणिज्य शिक्षण के निम्नलिखित अनुदेशनात्मक उद्देश्य हो सकते हैं—

(1) ज्ञान (Knowledge)—वाणिज्य अनुदेशन का प्रथम उद्देश्य है छात्रों को वाणिज्य से सम्बन्धित विविध तत्वों, सिद्धान्तों, नियमों तथा प्रत्यय का ज्ञान प्रदान करना। शिक्षक अपने शिक्षण के द्वारा छात्रों को बैंकिंग, पुस्तपालन, बीमा, बाजार, समय, श्रम बचाने के साधनों, यातायात के साधनों आदि से सम्बन्धित तथ्यों का ज्ञान प्रदान करता है। साधारण पुनर्स्मरण (Simple Recall), पुनर्पहचान (Recognition) तथा पुनर्उत्पादन (Reproduction) इस उद्देश्य के तीन विशिष्टीकरण हैं।

(2) बोध (Understanding)—वाणिज्य अनुदेशन का दूसरा उद्देश्य है छात्रों को वाणिज्य से सम्बन्धित तथ्यों का जो ज्ञान प्राप्त हुआ है, उस ज्ञान का अवबोध कराता। सरल शब्दों में वाणिज्य के विभिन्न तत्वों का ज्ञान प्राप्त होने पर शिक्षक के लिए आवश्यक है कि प्राप्त ज्ञान में से आवश्यक तत्वों का बोध कराये या उनके सम्बन्ध में ज्ञान का विकास करे। यह सत्य है कि व्यक्ति जितना जानता है इस सभी का उसे बोध नहीं होता है। ज्ञान की अपेक्षा बोध कम ही होता है किन्तु जिसका व्यक्ति को बोध नहीं होता है उसका ज्ञान उसे अवश्य होता है। बोध होने पर बालक अन्तर करना, वर्गीकरण

Scanned by TapScanner

करना, श्रेणी विभाजन, तुलना करना, सारणीयन व्याख्या करना, अनुवाद करना आदि सीख जाता है। बोधात्मक उद्देश्य का यही विशिष्टीकरण है।

(3) ज्ञानोपयोग (Application)—वाणिज्य शिक्षण का आगामी अनुदेशनात्मक उद्देश्य छात्रों में ऐसी योग्यताओं का विकास करना है कि वह प्राप्त ज्ञान का बोध करने के बाद उसकी वास्तविक परिस्थितियों में प्रयोग कर सके। छात्र वाणिज्य से सम्बन्धित उन्हीं तथ्यों, नियमों, सिद्धान्तों आदि का प्रयोग कर सकता है जिनका उसे ज्ञान है तथा जिनका उसे बोध है। ज्ञान तथा बोध के अभाव से अनुप्रयोग सम्भव नहीं है। वह अनुदेशन का व्यावहारिक पक्ष है। छात्र जितना जानता है उससे कम का उसे बोध होता है और जितना बोध होता है उससे कम का वह अनुप्रयोग कर पाता है।

(4) कौशल (Skill)—कम समय व श्रम के साथ अधिक तथा सुन्दर व शुद्ध उत्पादन कौशल है। वाणिज्य में अनुदेशन का ज्ञान, बोध व अनुप्रयोग के उपरान्त आगामी उद्देश्य है छात्रों में वाणिज्य सम्बन्धी कौशलों का विकास करना। इस उद्देश्य की प्राप्ति में छात्र पुस्तपालन के विभिन्न नियमों का प्रयोग करते हुये कुशलता के साथ शुद्ध प्रविष्टियाँ कर सकता है तथा वह बैंकिंग, बाजार, व्यापार, बीमा, डाकघर आदि से सम्बन्धित कार्य कुशलतापूर्वक कर सकता है।

(5) अभिवृत्ति (Attitude)—वाणिज्य शिक्षक का प्रमुख कार्य यह भी है कि वह छात्रों में वाणिज्य के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास करे। वाणिज्य विषय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास करना भी वाणिज्य शिक्षण का एक प्राप्य या अनुदेशनात्मक उद्देश्य है। सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास होने से विषय में रुचि उत्पन्न होती है, लगन व प्रेरणा विकसित होती है, समस्याओं को समझने तथा उनका समाधान करने की योग्यता का विकास होता है, चिन्तन में वस्तुनिष्ठता आती है, संवेगों पर नियन्त्रण रखने की वृद्धि होती है तथा दूसरों के विचारों को समझने की योग्यता विकसित होती है। अभिवृद्धि का विकास होने पर छात्र वाणिज्य को अपना प्रिय तथा रोचक विषय मानने लगते हैं।

(6) सौन्दर्यानुभूति (Application)—प्राप्त ज्ञान को नवीन परिस्थितियों में स्वतन्त्र एवं मौलिक रूप से प्रयुक्त करने की क्षमता ही सौन्दर्यानुभूति का सराहनात्मक प्राप्त उद्देश्य है। वाणिज्य शिक्षण का चरण एवं शीर्ष उद्देश्य है। इस उद्देश्य की प्राप्ति पर छात्र में वाणिज्य के विभिन्न सिद्धान्तों, नियमों, प्रत्ययों आदि का स्वतन्त्र एवं मौलिक रूप से नवीन परिस्थितियों में प्रयोग करने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है। उसे वाणिज्य के कार्यों में आनन्द का अनुभव होता है तथा वह वाणिज्य से सम्बन्धित नियमों, सिद्धान्तों व कार्यों की अच्छाइयों की सराहना करने लगता है।

यहाँ पर उल्लेखनीय है कि वाणिज्य के सम्बन्ध में हम जितना ज्ञान रखते हैं, उसमें कम का बोध होता है उससे कम का ज्ञानोपयोग, उससे कम का कौशल, उससे कम की

Scanned by TapScanner

अभिवृत्तियाँ तथा उससे कम की सौन्दर्यानुभूति होती है किन्तु ज्ञान से अधिक श्रेष्ठ है बोध, बोध से उत्तम है ज्ञानोपयोग, उससे अधिक उपयोगी है कौशल, कौशल से अधिक श्रेष्ठ है अभिवृत्तियाँ तथा सर्वोत्तम है सौन्दर्यानुभूति। इसे एक शंकु (Cone) के माध्यम से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया जा सकता है।

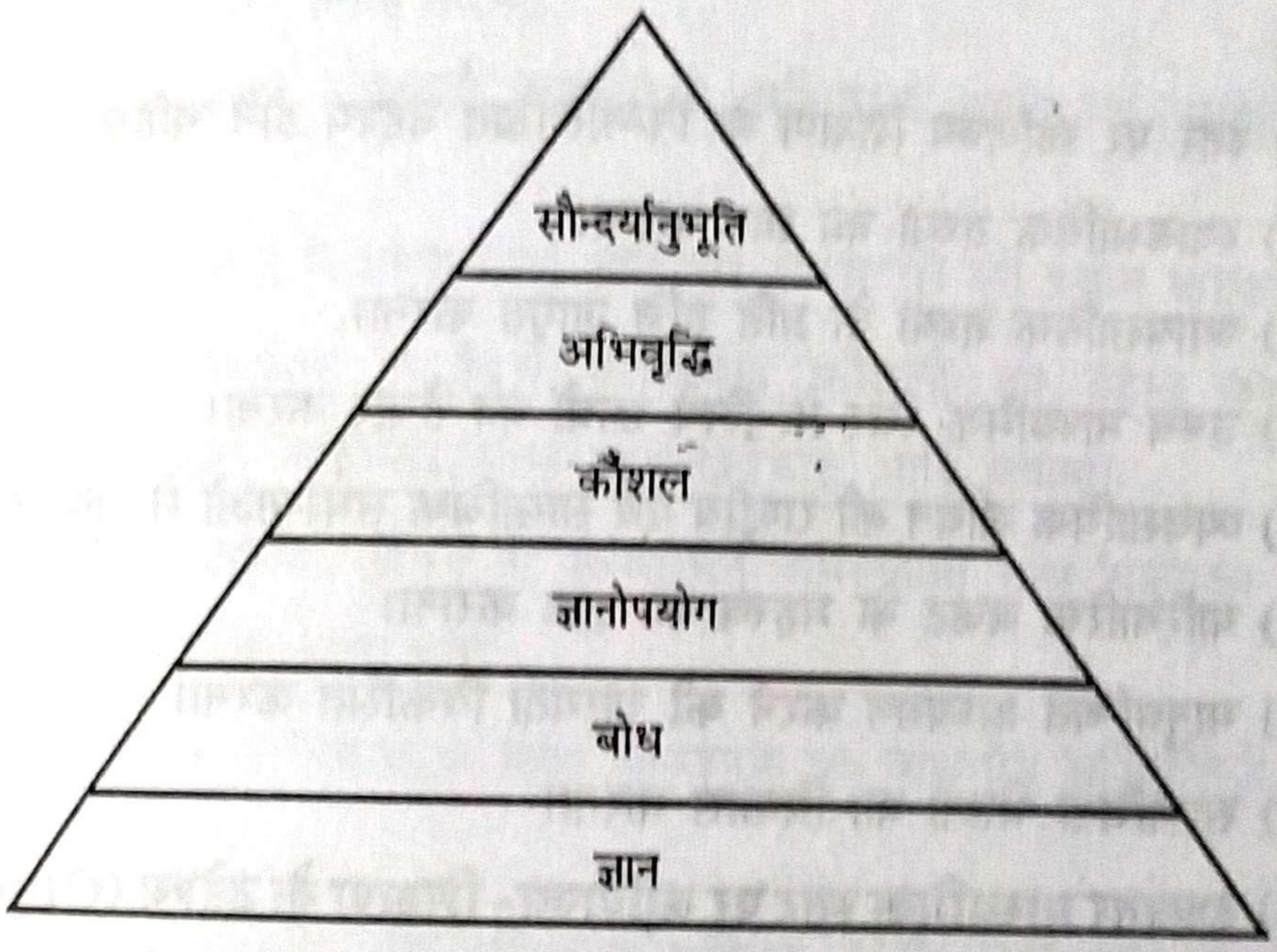

चित्र-अनुदेशनात्मक उद्देश्यों का शंकु

इसमें ज्ञान आधार है तथा सर्वाधिक है जबकि सौन्दर्यानुभूति शीर्ष पर है, सर्वोत्तम है किन्तु सबसे कम मात्रा में है।

Scanned by TapScanner